खिलौनों से 'वैज्ञानिक' बनाने में जुटे हैं अरविंद गुप्ता

खेल-खेल में आसान और रुचिकर तरीके से बच्चों को सिखाते हैं विज्ञान

आईआईटी के इंजीनियर अरविंद गुप्ता का एक ही सूत्र है: आसान और रुचिकर तरीके से बच्चों को विज्ञान के करीब लाना. इसका सबसे अच्छा रास्ता उन्हें लगा वैज्ञानिक आधार पर बच्चों के खिलौने तैयार करना. इस क्षेत्र में उन्हें महारत और प्रतिष्ठा दोनों हासिल है. इंटर-यूनिवर्सिटी सेंटर फार एस्ट्रोनॉमी एंड एस्ट्रोफिजिक्स (आईयूसीएए) में स्थित 'पुलस्त्य' भवन में उनका दफ्तर है और यहां अक्सर बच्चों की भीड़ लगी रहती है. 60 वर्षीय अरविंद ने अपनी सोच, कार्य और अनुभवों पर बातचीत की और सवालों के जवाब दिए.

प्रश्न: अपनी शिक्षा और खिलौनो के बारे में बताइये?

उत्तर: मैं उत्तर प्रदेश के बरेली शहर में जन्मा और पला-बढ़ा. सन् 1970 में आईआईटी कानपुर से बीटेक की डिग्री ली. उस समय भी मैं बच्चों को सरल-सहज ढंग से पढ़ाने की सोचा करता था. उन्हीं दिनों आईआईटी के छात्रों ने चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के बच्चों के लिए 'ऑपरचुनिटी स्कूल' शुरू किया और यहीं से जैसे मुझे मेरी दिशा मिल गई.

इसके बाद मैंने टाटा मोटर्स को ज्वाइन किया और वहां दो साल काम करने के बाद मैं मध्य प्रदेश के एक गांव पलिया पिप्रिया चला गया और गांव के बच्चों को पढ़ाने लगा. इस कार्यक्रम को किशोर भारती ने आयोजित और टाटा ट्रस्ट ने प्रायोजित किया था. यहां मैंने सीखा कि किस तरह वेस्ट मैटेरियल से भी वैज्ञानिक खिलौने बनाए जा सकते हैं. वेस्ट मैटेरियल में मैंने साइकिल के ट्यूब, माचिस की डिब्बी और जली हुई तीलियां तक इस्तेमाल की. इस पर मैंने एक किताब भी लिखी जिसका टाइटिल है 'Match stick moded and other science experiences'

प्रश्न: तब आप पुणे कैसे लौट आए?

उत्तर: कुछ पारिवारिक कारणों से मुझे 2003 में पुणे लौटना पड़ा. वरिष्ठ वैज्ञानिक प्रो. जयंत नरलीकर ने मुझे यहां आईयूसीएए में आमंत्रित किया. बच्चों के लिए यह बिल्डिंग पुलस्त्य स्वर्गीय लेखक पु.ल. देशपांडे की पत्नी सुनीता बाई देशपांडे और यूएसए स्थित मराठी एनआरआई की संस्था महाराष्ट्र फाउंडेशन के आर्थिक सहयोग से बनी. इसका उद्देश्य है साइंस को मनोरंजक ढंग से स्कूली बच्चों को करीब लाना कि वे इस विषय से दोस्ती कर लें.

प्रश्न: इस सेंटर की गतिविधियां क्या हैं?

उत्तर: पुलस्त्य के निर्माण में श्री नारलीकर और श्रीमती देशपांडे से लेकर अनेक लोगों का सहयोग है. टाटा ट्रस्ट पिछले नौ वर्षों से इस सेंटर को आर्थिक सहयोग दे रहा है. यहां हमारे पास डॉ. विदुला महास्किर, अशोक रूपनर और शिवाजी माने जैसे कर्मठ लोगों की टीम है. सप्ताह के हर मंगलवार और गुरुवार को यहां बच्चे वर्कशाप में भाग लेने आते हैं. हमारे पास लाइव लैब है जिसमें हम बच्चों को खिलौने बनाने और सिखाने से लेकर पिक्चर भी दिखाते हैं. अब हम टाटा ट्रस्ट फंडेड आर्गनाइजेशन के एक ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट के रूप में काम कर रहे हैं.

प्रश्न: आपकी वेबसाइट में क्या है?

उत्तर: www.arvindguptatoys.com मेरी वेबसाइट को हजारों लोगों ने डाउनलोड किया है. इसका 16 भाषाओं में अनुवाद हुआ है. वेबसाइट में खिलौने, किताबें, वीडियो आदि हैं जो बच्चे निःशुल्क डाउनलोड कर सकते हैं. इसमें अलग-अलग भाषाओं में खिलौने बनाने के तरीके बताए गए हैं जिन्हें वो आसानी से समझ लेते हैं.

प्रश्न: अपने कैरियर के बारे में आपका क्या कहना है?

उत्तर: प्रो. यशपाल जब दिल्ली में डिपार्टमेंट ऑफ साईंस एंड टेक्नोलॉजी में थे तो उन्होंने मुझे फेलोशिप दिलाई. मैंने अपने कई प्रयोगों को राष्ट्रीय दूरदर्शन पर दिखाया. उसी समय मुझे (सीएसीएआरटी) की फेलोशिप 12 वर्ष के लिए मिली. मैं नेशनल काउंसिल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग (एनसीआरटी) के साथ मिलकर 150 से ज्यादा फिल्में बनाई जो राष्ट्रीय दूरदर्शन के तरंग कार्यक्रम में दिखाई गईं और सात भाषाओं में इनका अनुवाद हुआ.

प्रश्न: बच्चों को आपका क्या संदेश है?

उत्तर: मैं उनसे यही कहता हूं कि यदि उनमें सीखने की धुन (पैसन) है तो उन्हें आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता. सकारात्मक सोच रखो और विज्ञान तो अथाह है. इसमें हजारों पहलू अनछुए पड़े हैं जितना एक्सप्लोर कर सकते हो वो करो. मजेदार विषय है इससे दोस्ती बढ़ाओ.

- अरविंद गुप्ता को विश्व में साईंस ट्वाएज निर्माता के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है.
- उनकी किताबों का 17 भाषाओं में अनुवाद हुआ है और उनके बनाए खिलौने कई देशों में लोकप्रिय हैं.
- वे 20 देशों में काम कर चुके हैं और विज्ञान को लोकप्रिय बनाने के लिए उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है.
- वे आईआईटी कानपुर के बीटेक हैं और बरसों से बच्चों व विज्ञान के लिए काम कर रहे हैं.